साइलेन्स की शक्ति द्वारा ही शिव-शक्तियों सहित बापदादा की प्रत्यक्षता

आज बापदादा के पास मीठी माताओं और सिकीलधे पाण्डवों की यादप्यार लेकर पहुंची तो क्या देखा कि बापदादा दूर से ही बांहें पसार मीठे-मीठे बोल से बुला रहे थे ''आओ बच्ची, मीठी बच्ची, नूरे रत्न बच्ची, दिलतख्तनशीन बच्ची आओ।'' तो मैंने देखा कि आज तो मैं अकेली नहीं हूँ, हमारे साथ सर्व भट्ठी की माताओं और पाण्डवों का संगठन भी है। बापदादा सब बच्चों को देख-देख बहुत हर्षित हो रहे थे। कुछ समय के बाद बाबा बोले, आज तो बच्चों को बाबा ने विशेष वतन में बुलाया है। चलो तो स्व राज्य सभा में ले चलें। ऐसे कहते क्या देखा बहुत सुन्दर स्थान था, हम सब अर्ध चन्द्रमा के रूप से बैठ गये और सामने सफेद-सफेद लाइट से सजा हुआ बड़ा चबूतरा बना हुआ था, वो जैसे तख्त के रूप में था, जिस पर बापदादा और साथ में आज सिर्फ दो दादियां नहीं थी लेकिन अपनी स्थापना के आदि की दादियां भी थी। 1- बड़ी दादी 2- दादी जानकी 3- दादी निर्मल शान्ता 4- दादी मनोहर 5- दादी रतनमोहिनी 6- दादी शान्तामणी 7- गंगे दादी

8- ईशू दादी भी साथ में थी। हमें भी साथ में बापदादा ने बुलाया और सबको दिलाराम बाप ऐसी दृष्टि दे रहे थे जैसे अपने में ही समा रहे हैं और हम सब भी समा गये। बाबा बोले, देखो बापदादा आज विशेष निमित्त स्थापना के आदि रत्न दादियां 9 रत्न ही देख रहे हैं। साथ में आपकी सेवा के साथी आदि रत्न भी बापदादा को याद आ रहे हैं। वह भी बहुत अच्छी सेवा के निमित्त बने हैं। ऐसी स्टेज पर हम सब भी अर्ध चन्द्रमा समान बैठे थे, बीच में बापदादा थे। दृश्य बहुत दिलकश (दिल को कशिश करने वाला) था। ऐसे लग रहा था जैसे स्वराज्य अधिकारी राज्य सभा लगी हुई है। उसके बाद बापदादा सर्व बच्चों को देख नयनों की दृष्टि से निहाल कर रहे थे और बोले, आज बापदादा ने इस ग्रुप को वतन में क्यों बुलाया है, जानती हो? सब दादियों को देख-देख बाबा पूछ रहे थे, सब मुस्करा रहे थे। बापदादा बोले, आज विशेष माताओं को बधाई देने के लिए बुलाया है। मुबारक देने लिए बुलाया है। बापदादा ने देखा कि 4 हज़ार मातायें हैं लेकिन मौन का डायरेक्शन अच्छा प्रैक्टिकल में लाया है। दुनिया में तो कहते जहाँ दो तीन मातायें भी इक्ट्ठी होती तो चुप नहीं रह सकती लेकिन आज माताओं ने करके दिखाया कि हम शिव शक्तियां जो चाहे वह कर सकती हैं क्योंकि हमारा साथी भगवान है। माताओं की हिम्मत पर बापदादा हर्षित हो रहे हैं। बाद में बापदादा पाण्डवों को देख बोले, देखो यह युगल रूप में सन्यासियों को भी झुकाने वाले मेरे बहादुर बच्चे हैं। इन बच्चों ने विश्व के आगे सैम्पुल बन दिखाया कि साथ में रहते, प्रवृत्ति सम्भालते कमल पुष्प समान बनना कोई मुश्किल नहीं है, इसलिए बापदादा का बच्चों पर बहुत स्नेह है। यह मेरे सपूत बच्चे विश्व को चैलेन्ज करने वाले हैं। बाद में यह संगठन का दृश्य समाप्त हो गया और मैं अपने को ही बापदादा के सामने देखने लगी। बाबा ने पूछा बच्ची और क्या समाचार लाई हो? मैं बोली बाबा आजकल तो मधुबन (शान्तिवन) में मौन भट्ठियां चल रही हैं। उसमें सबने डीप साइलेन्स, पॉवरफुल योग और मन्सा सेवा में आगे बढ़ने का अनुभव बहुत अच्छा किया है। बापदादा बोले,

वर्तमान समय के प्रमाण अब मन्सा सेवा और पॉवरफुल याद द्वारा ही सेवा का पार्ट खुलना है और इससे धारणा स्वरूप भी सहज बन जायेंगे क्योंकि अब साइलेन्स की शक्ति का झण्डा लहरना ही है, इससे ही शिव शक्तियां बापदादा सहित प्रत्यक्ष होंगी। अब हर एक बच्चे को ऐसे अभ्यास में विशेष समय देना है। उमंग-उत्साह से आगे बढ़ना है।

उसके बाद मैंने फारेन सेवा का विशेष समाचार सुनाया। दादी जानकी के फास्ट चक्कर का समाचार सुनाया। बाबा बोले, बच्ची को बाप की मदद के साथ अपना सेवा का उत्साह ही चला रहा है। सब बच्चे साथ में भी बहुत अच्छी दिल से सेवा कर रहे हैं। बापदादा सब बच्चों को विशेष याद दे रहे हैं। उसके बाद बाबा को सुनाया कि बाबा आप जो साकार में कहते थे कि आपके बड़े-बड़े स्थान बनेंगे तो अब बड़े रिट्रीट हाउस बन गये हैं और बन रहे हैं। लोग भी बहुत खुशी से आ रहे हैं। देहली में भी आपकी दी हुई गिफ्ट ओ.आर.सी. में अच्छी सेवा चल रही है। हैदराबाद में भी उमंग से बना रहे हैं। विदेश में भी सबको बहुत बनाने का उमंग है। ब्लू माउण्ट में भी सेवा अच्छी चल रही है। मधुबन में तो निमन्त्रण थोड़ों को देते लेकिन आते अपनी रूचि से ज्यादा हैं। बापदादा बोले, बच्ची सब निमित्त बने हुए बच्चों की हिम्मत पर बापदादा भी बलिहार जाते हैं और ऐसे बच्चों को दिलाराम बाप दिल से स्पेशल याद देते हैं, मुबारक देते हैं। अब तो बच्चों को समय प्रमाण अपने मिले हुए सर्व खज़ानों के अखण्ड महादानी बन, निरन्तर रहमदिल स्वरूप से आत्माओं को शान्ति की, सुख की अंचली देने में ही बिज़ी रहना है। स्व-सेवा और विश्व सेवा की लहर अपने में और सर्व में फैलानी है। बापदादा की अब यही आश है कि मेरे विश्व की सब आत्मायें दु:ख, अशान्ति से मुक्त हो जाएं। बोलो बच्चे, आप सबको भी यही तात-लात लगी हुई है ना। ऐसे कहते जैसे बापदादा रहमदिल दृष्टि सर्व बच्चों को दे रहे थे और मैं भी ऐसी मीठी दृष्टि लेते हुए साकार वतन पहुंच गई। ओम् शान्ति।